शेख़ फ़रीद - सबद १७

फरीदा जिन्ह लोइण जगु मोहिआ से लोइण मै डिठु ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७८

फरीदा जिन्ह लोइण जगु मोहिआ से लोइण मै डिठु ॥
कजल रेख न सहदिआ से पंखी सूइ बहिठु ॥१४॥

सार: सांसारिक प्रलोभन जैसे धन, शक्ति या प्रतिष्ठा मन को अपनी ओर खींचते हैं जिससे लोग इन क्षणिक लाभों पर केंद्रित हो जाते हैं। यह ध्यान अक्सर उन कामों से हटा देता है जो सर्व जन की भलाई के लिए होते हैं और व्यक्ति अपने स्वार्थ पर ध्यान केंद्रित करने लगता है।

फरीदा जिन्ह लोइण जगु मोहिआ से लोइण मै डिठु ॥
फरीद कहते हैं कि उन्होंने उन आँखों को देखा है जिन्हें दुनिया की लालसा ने लुभाया है। यह मायावी, सांसारिक लालसा के परिणाम को दर्शाती हैं।

कजल रेख न सहदिआ से पंखी सूइ बहिठु ॥१४॥
जो आंखें कोयले की हल्की सी झलक भी सहन नहीं कर सकती थीं, बदलाव के प्रति अनिच्छा दिखाती थीं, अब उसी जगह पर पक्षी अपने बच्चों का घोंसला बनाते हैं, जो परिवर्तन का प्रतीक है। यह दृश्य प्रतिरोध से स्वीकृति की ओर बदलाव को दर्शाता है। (१४)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद कहते हैं कि जब व्यक्ति अपने अहंकार और डर पर काबू पाकर नए विचार और दृष्टिकोण अपनाता है, तब वह सच्चे विकास के लिए खुद को तैयार करता है। यह बदलाव व्यक्ति को अधिक रचनात्मक बनाता है और उसे परिस्थिति के अनुसार ढलने में मदद करता है, जिससे वह अपने पुराने विश्वासों को चुनौती देकर नए विचारों को समझने में सक्षम होता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com